IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 5, March 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी साहित्य में आदिवासी स्वर

डॉ. बलवंत जेऊरकर
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली
balwantjeurkar75@gmail.com

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श, किसान विमर्श, किन्नर विमर्श आदि विमर्शों की तरह आदिवासी विमर्श आज एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में अपनी उपस्थिति को रेखांकित करता हुआ परिलक्षित हो रहा है। आदिवासी साहित्य को महत्वपूर्ण रचना-विधान के रूप में भी महत्व्पूर्ण मन गया है। आदिवासियों की पीड़ा अन्य पीड़ित जनों से अलग है। जंगलों के रूप में उनके घर उनसे छीन लिए गए हैं। विकास के नाम पर उजाड़ होते जंगलों में आदिवासी बेघर हैं। लोकगीत गाता, अद्भूत कलाकारी को अभिव्यक्त करता आदिवासी पहले मासूम होता था परन्तु आज वह अपनी खोयी पहचान को ढूंढ रहा है। अस्मितामूलक विमर्श के रूप में आदिवासी विमर्श आदिवासियों पर हुए अत्याचार और अधिकार की मांग करता हुआ संघर्ष करता हुआ परिलक्षित होता है।

साहित्य हमेशा से ही पीड़ा भरी वाणी को मुखर बनाने और परिरोध व्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही है। आदिवासी साहित्य पढ़ने के कारण अलक्षित, सैंकड़ों वर्षों से अँधेरे में गुम, अपनी पहचान के लिए छटपटाते आदिवासियों के दर्दनाक जीवन-जगत से परिचय मिलता है।

बीज शब्द – आदिवासी विमर्श, उलगुलान, जंगल, भूमिपुत्र, संघर्ष।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568